

वैदिकवाङ्मय

परीक्षा दृष्टि

(NTA, UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GIC-Lecturer, GDC, Higher Education
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी)

लेखक
सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज
www.sanskritganga.org

ISBN : 978-81-938257-1-6

☛ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☛ **वितरक**

* **युनिवर्सल बुक्स**
अल्लापुर, प्रयागराज
* **राजू पुस्तक केन्द्र**
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) मो० 9453460552

☛ संस्करण - मई-2019

☛ **मूल्य – ₹ 145 /-** (एक सौ पैंतालीस रुपये मात्र)

☛ **पृष्ठविन्यास** – कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज, प्रयागराज

☛ **मुद्रक** – एकेडमी प्रेस, दारागंज, प्रयागराज

भूमिका

प्रिय संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय!

वेद भारत की अस्मिता है। वेदों के बिना भारत का अस्तित्व नगण्य है। वेदों के पठन-पाठन पर हमारे ऋषि-मुनियों ने सदैव अत्यधिक बल दिया है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण वैदिक मार्ग का अनुसरण करने में ही है। मनु ने वेदों को सभी धर्मों का मूल बताया है - 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। वेदों में मानवमात्र के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है -

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

पतञ्जलि भी निःस्वार्थभाव से वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते हैं - 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।' वेदों को प्रमाणरूप में स्वीकार करना ही एक सच्चे आर्य का लक्षण है - 'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु।' परन्तु आज की पीढ़ी वैदिकवाङ्मय के अमूल्य ज्ञान से अनभिज्ञ प्राय है, जो कि भारत की अस्मिता के लिए अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक अपने इष्ट मित्रों के साथ विचार कर एक ऐसी पुस्तक का निर्माण करने का सङ्कल्प लिया गया, जो आज की युवा पीढ़ी को वैदिक वाङ्मय को सरलतम भाषा में परिचित करा सके। इस पुस्तक के माध्यम से छात्र वैदिक वाङ्मय के सारगर्भित स्वरूप से परिचित हो सकेगा।

चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, इतिहासवेद), छः वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) वेदों के ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक तथा उपनिषदों के ग्रन्थीय स्वरूप को क्रमशः महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं सहित सरलतम रूप में प्रस्तुत

किया गया है। वैदिक देवताओं के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए अद्यावधि लिखे गये वेदभाष्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सूची इस पुस्तक के महत्त्व को और अधिक बढ़ाती है। **यह पुस्तक UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GDC, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी - ऐसा मेरा विश्वास है।**

पङ्कजकुमार शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, सुमन सिंह, अम्बिकेश प्रताप सिंह, कविता सिंह, नीलम गुप्ता, नितीश उपाध्याय, स्नेहा पाण्डेय, महिमा यादव, कृष्णकुमार, राजेश तिवारी, श्यामकिशोर मिश्र, सन्तोष यादव 'साहब' आदि मित्रों के निरन्तर सहयोग व चिन्तन से ही यह कार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका है। इस ग्रन्थ को लिखते समय पूरी सावधानी के साथ यह प्रयत्न किया गया है कि पाठकगण वैदिकवाङ्मय के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं से अनायास परिचित हो सकें।

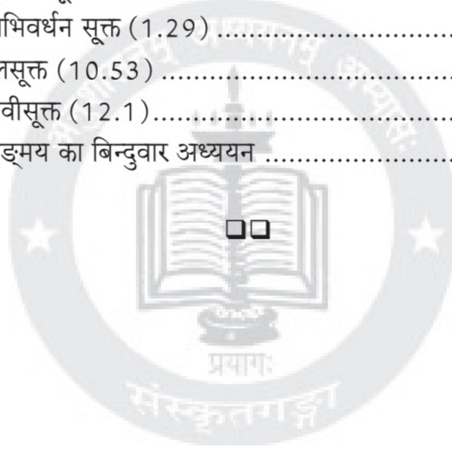
श्रीमान् अनन्त प्रसाद त्रिपाठी (गहनौआ, रीवा म.प्र.) एवं प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (प्रयागराज) के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए ये आशा है कि यह ग्रन्थ निश्चित ही पाठकों की जिज्ञासा को पूर्णकर वेदों के प्रति उन्हें आकृष्ट करेगा।

विनयावनत

सर्वज्ञभूषण

❑❑

विषयसूची


प्रयागः
संस्कृतगङ्गा

❑❑

९. वेदाङ्ग

- वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है। उन्हे वेदाङ्ग कहते हैं।
- वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग।
- 'वेदाङ्ग' में अङ्ग शब्द का अर्थ है 'वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।' 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि।'
- वेदाङ्गों के द्वारा मन्त्रों का अर्थ उनकी व्याख्या तथा यज्ञ में उनके विनियोग आदि का बोध होता है।
- वेदाङ्गों की संख्या छः है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

'छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥ (पा0शि041-42)'

1. छन्द	पाद (पैर)
2. कल्प	हस्त (हाथ)
3. ज्योतिष	चक्षु (नेत्र)
4. निरुक्त	श्रोत्र (कान)
5. शिक्षा	घ्राण (नाक/नासिका)
6. व्याकरण	मुख (मुँह)

- वेदाङ्गो का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चार वेदों के नाम के बाद हुआ।
- उपनिषदों में दो प्रकार की विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है-पराविद्या,अपराविद्या। अपराविद्या के अन्तर्गत चार वेद तथा छः वेदाङ्ग आते हैं।

- हलायुध ने छन्दसूत्र पर 'मृतसंजीवनी' टीका लिखी।
- ऋग्वेद में अधिकांश 20 अक्षरों वाले छन्दों से लेकर 48 अक्षरों वाले छन्द प्रयुक्त हैं।

छन्द विषयक नियम

- पद के अन्त के साथ शब्द का अन्त होता है।
- ह्रस्व स्वर के बाद संयुक्त वर्ण होंगे तो पूर्ववर्ती लघु स्वर को गुरु माना जाता है। बाद में कोई स्वर हो तो पूर्ववर्ती दीर्घस्वर को ह्रस्व कर दिया जाता है।
- शब्द के अन्तर्गत और सन्धि स्थानों में प्राप्त य् व् को आवश्यक्तानुसार क्रमशः इ,उ पढ़ा जाता है।
- एकादेश हुए स्वरों को उच्चारण के समय आवश्यकतानुसार एकादेश से पूर्व की स्थिति में पढ़ा जाता है।
- ए और ओ के बाद पूर्वरूप हुए अ को आवश्यक्तानुसार फिर अ पढ़ा जाता है।

छन्द नाम	अक्षर/वर्ण	पाद
1. गायत्री	24	3
2. उष्णिक्	28	3
3. अनुष्टुप्	32	4
4. बृहती	36	4
5. पंक्ति	40	5
6. त्रिष्टुप्	44	4
7. जगती	48	4
8. अतिजगती	52	5
9. अतिशक्वरी	60	5
10. अष्टि	64	5

- छन्द में एक अक्षर कम होने पर निचृत् कहलाता है जैसे- निचृत् गायत्री, निचृत् उष्णिक् आदि। निचृत् गायत्री में 23 अक्षर होते हैं।
- छन्द में एक अक्षर अधिक होने पर भुरिक् कहलाता है जैसे- भुरिक् गायत्री, भुरिक् उष्णिक् भुरिक अनुष्टुप् आदि। भुरिक् गायत्री में 25 अक्षर होते हैं।
- छन्द में दो अक्षर कम होने पर विराट् कहा जाता है जैसे- विराट् गायत्री, विराट् उष्णिक् आदि। इस प्रकार विराट् गायत्री में 22 अक्षर होंगे।
- छन्द में दो अक्षर अधिक होने पर स्वराट् कहा जाता है जैसे- स्वराट् गायत्री, स्वराट् उष्णिक् स्वराट् अनुष्टुप् आदि। इस प्रकार स्वराट् गायत्री में 26 अक्षर होंगे।

निरुक्त वेदाङ्ग

- निरुक्त आचार्य यास्क की कृति है जिसमें बारह अध्याय है तथा दो अध्याय परिशिष्ट के रूप में है। परिशिष्ट सहित 14 अध्याय है।

- निरुक्त वेदपुरुष का श्रोत्र (कान) है – **'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'**
- निरुक्त निघण्टु का व्याख्यान ग्रन्थ है जिसमें ऋग्वेद के शब्दों का संग्रह है।
- निरुक्त के प्रारम्भिक तीन अध्याय **'नैघण्टुक काण्ड'** कहे जाते हैं।
- चार, पाँच, छः अध्याय को **'नैगम काण्ड'** कहा जाता है।
- अन्तिम छः अध्याय (7-12) को **'दैवत काण्ड'** के नाम से जाना जाता है।
- निरुक्त में शब्दों का निर्वचन तीन प्रकार से किया गया है - प्रत्यक्ष, परोक्ष, अतिपरोक्ष।
- निरुक्त को **'शब्द व्युत्पत्ति शास्त्र'** भी कहा जाता है।
- निरुक्त में तीन काण्ड हैं- नैघण्टुक काण्ड, नैगम काण्ड,दैवत काण्ड।
- नैगम काण्ड को 'ऐकपदिक' भी कहा जाता है।
- वैदिक शब्दों का संग्रह निघण्टु में तथा उनकी व्याख्या निरुक्त में है।
- दुर्गाचार्य, यास्क कृत निरुक्त के प्रसिद्ध टीकाकार हैं।
- वेदों के अर्थों को स्पष्ट करने में निरुक्त आवश्यक है और व्याकरण शास्त्र का पूरक है।
- वेदमन्त्रों के कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति निरुक्त करता है- **'अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'** - सायण
- निरुक्त में चार प्रकार के पद हैं- नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात **'चत्वारि पदजातानि नामाख्याते च, उपसर्गनिपाताश्च'**

यास्क के पूर्ववर्ती निरुक्तकार-

- आग्रायण, औपमन्यव, और्णवाभ, गार्ग्य, गालव, वार्ष्यायणि, शाकपूणि आदि।

  निरुक्त के टीकाकार- निरुक्त की तीन टीकाएँ प्राप्त होती है जो हैं-

  1 दुर्गाचार्य कृत ऋज्वर्थ वृत्ति टीका

  2 स्कन्द महेश्वर कृत टीका जो लाहौर से प्रकाशित हुई।

  3 वररुचि कृत निरुक्त निचय टीका
- निरुक्त के पाँच प्रतिपाद्य विषय हैं-

  वर्णागम, वर्णविपर्यय, वर्णविकार, वर्णनाश, धातु का अनेक अर्थों में प्रयोग।

''वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम्॥''

निरुक्त में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादितविषय	अध्याय
निघण्टु, नाम आख्यात आदि पद विभाग, शब्दनित्यता का विवेचन मन्त्रों की सार्थकता का प्रतिपादन, अर्थ ज्ञान का महत्त्व	अध्याय-एक
निर्वचन, वर्णपरिवर्तन आदि से सम्बन्ध भाषाशास्त्रीय विवेचन।	अध्याय 2-3

वेदों के निघण्टु में पढ़े गए कठिन शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या।	अध्याय 4-6
देवतावाची शब्दों की विस्तृत व्याख्या, द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथिवी स्थानीय देवों का निरूपण।	7-12
निर्वचन प्रक्रिया, सृष्टि उत्पत्ति, आदि अनेक विषयों का विवेचन।	अध्याय 13-14

नोट- निरुक्त का अध्याय 13,14 परिशिष्ट के रूप में हैं।

ज्योतिष वेदाङ्ग

- आचार्य पाणिनि ने ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र कहा है **'ज्योतिषामयनं चक्षुः'**
- ज्योतिष का अर्थ है- ज्योतिर्विज्ञान। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशीय पदार्थों की गणना ज्योतिर्मय पदार्थों के अन्तर्गत होती है।
- वेदाङ्ग ज्योतिष भारतीय ज्योतिष शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है, जिसके रचयिता **लगध** नामक ऋषि हैं।
- वेदाङ्ग ज्योतिष के दो पाठ प्राप्त होते हैं।
- एक का नाम आर्चज्योतिष अर्थात् ऋग्वेद सम्बन्धी ज्योतिष तथा दूसरे का नाम **याजुष्** ज्योतिष अर्थात् यजुर्वेद सम्बन्धी ज्योतिष।
- ऋग्वेद ज्योतिष में 36 श्लोक तथा यजुर्वेद ज्योतिष में 44 श्लोक हैं।

विद्वानों के अनुसार वेदाङ्ग ज्योतिष का समय-

- शङ्करबालकृष्ण दीक्षित 1400 ई.पू. मानते हैं।

ह्विटनी -1338 ई.पू.	कालब्रुक-1410 ई.पू.
बेवर- 500 ई.पू.	मैक्समूलर- 300 ई.पू.

- शोभाकार द्वारा वेदाङ्ग ज्योतिष पर एक भाष्य प्रकाशित है। सुधाकर द्विवेदी ने भी वेदाङ्गज्योतिष पर भाष्य लिखा है।
- वेदाङ्गज्योतिष के प्रथम आचार्य ब्रह्मा हैं।
- ब्रह्मा ने अपने पुत्र वसिष्ठ को ज्योतिष विद्या सिखायी।
- विष्णु ने उस ज्ञान को सूर्य को सिखाया जो 'सूर्य सिद्धान्त' कहा जाता है।
- सूर्य ने उस सिद्धान्त को मय को पढ़ाया जो 'वासिष्ठ सिद्धान्त' नाम से प्रसिद्ध हुआ। ज्योतिषशास्त्र का प्राचीनरूप वैदिक संहिताओं में प्राप्त होता है।

वेदाङ्ग ज्योतिष में प्रतिपादित विषय-

- काल का विभाजन, नक्षत्र और नक्षत्र देवता, युग के वर्ष, काल और तिथि का निर्णय, अयन और पर्व निर्धारण, नक्षत्रों का काल विभाजन, तिथि-नक्षत्र, नक्षत्र और पर्व का काल निर्धारण, अधिक मास आदि।
- 'वेदाङ्ग ज्योतिष' के अनुसार **पाँच सौर वर्षों का** एक युग होता है।
- पाँच सौर वर्षों के नाम हैं- संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इद्वत्सर, वत्सर।
- पाँच वर्ष का युग मानने का कारण- पाँच वर्ष बाद सूर्य और चन्द्रमा राशिचक्र के उसी नक्षत्र पर पुनः एक सीध में होते हैं।